7

उसकी देह में मेल सम्भव बनाया गया

(2:14-22)

यहूदियों और अन्यजातियों के बीच कुछ पक्के अन्तरों की ओर ध्यान दिलाने के बाद पौलुस ने घोषणा की कि दोनों गुटों में शांतिपूर्ण सम्बन्ध हो सकते हैं। यह कैसे सम्भव था? पौलुस ने कहा, ''क्योंकि वही हमारा मेल है'' (2:14)। यहां उसने 2:18 तक चलने वाले विषय अर्थात शांति के विषय का परिचय दिया। प्रेरित ने पहले यहूदियों और अन्यजातियों के बीच सुलह दिखाई थी (2:14, 15); फिर उसने मनुष्यों और परमेश्वर के बीच सुलह पर चर्चा की (2:16-18)।

एक ही देह में सब लोगों के बीच मेल (2:14, 15)

[14]क्योंकि, वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों को एक कर लिया: और अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया। [15]और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे।

आयत 14. यशायाह 9:6 में मसीहा को आने वाला ''शान्ति का राजकुमार'' के रूप में दिखाया गया था। मसीह के जन्म के समय स्वर्गदूतों ने ''मनुष्यों में शान्ति'' के गीत गाए थे (लूका 2:14)। परन्तु इफिसियों 2 में पौलुस ने यीशु को **हमारा मेल** के रूप में दिखाया इसकी मनुष्यों के बीच शांति और मनुष्यों और परमेश्वर के बीच शांति दोनों ही मसीह के साथ जुड़ी है। इस उपयोग पर दिया जाने वाला बल ज़ोरदार है; इसे इस प्रकार पढ़ा जाए, ''वह स्वयं, वही न के की कोई और। ...''[1] **वही** का अर्थ न केवल ''केवल वह'' बल्कि ''वह *अपने आप में*''[2] ही है। इसके अलावा यूनानी धर्मशास्त्र में ''मेल'' में एक उप-पद है, ताकि इस विचार को इस प्रकार से पढ़ा जाए, ''क्योंकि वह स्वयं, न कि कोई और, हमारा मेल है।'' वह हमारा मेल है; जिसके द्वारा हमें शांति मिली है, और बिना उसके सुलह नहीं है।

आयत 14 वाला ''मेल'' शब्द, *eirēnē* जुड़ा है ''एक दूसरे से मिली बातों से जो कभी अलग अलग थी।''[3] संदर्भ से पता चलता है कि वे अलग हुई ''बातें'' यहूदी और अन्यजाति लोग थे। पहली सदी में एक मानवीय दृष्टिकोण से यहूदी और अन्यजाति लोग निराशाजनक ढंग से बंटे हुए थे। यहूदी लोग अन्यजातियों को नीच, गंदे कुत्ते मानते थे (देखें मत्ती 15:27)। वे किसी अन्यजाति के घर में प्रवेश नहीं करते थे (देखें प्रेरितों 10:28)। अन्यजाति यहूदियों को अलगाववादी और घमण्डी और जातिवादी मानकर उनके साथ वैसा ही व्यवहार करते थे।

परन्तु मसीह ने **दोनों को एक** कर **लिया**। यह एक क्रांतिकारी विचार था। ''हमारा मेल''

के रूप में मसीह में क्रूस के द्वारा यह एकता लाई। क्रूस के दोनों दिशाओं में फैले शतीरों की तरह, मसीह की बाहें यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को इकट्ठा करने के लिए दोनों दिशाओं में फैली हुई थी।

इन दोनों समूहों को अपनी देह में लाकर, मसीह ने **अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया**। ''दीवार'' (*phragmos*) यहूदियों और अन्यजातियों के बीच मुख्यतया मूसा की व्यवस्था थी जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को दी (देखें 2:15)। व्यवस्था ने यहूदियों को परमेश्वर की वाचा के लोग बना दिया और उन्हें दूसरे लोगों से अलग कर दिया। इसके अलावा व्यवस्था के कारण बीच में और कई चीज़ें आ गईं। उदाहरण के लिए यरूशलेम का मन्दिर यहूदियों और अन्यजातियों के बीच रुकावट था। अन्यजातियों को इसका बाहरी आंगन मिला था जिसे अन्यजातियों का आंगन कहा जाता था, जिसमें कोई भी जा सकता था। अन्यजातियों के आंगन के बीच में स्त्रियों का आंगन था, जिसमें यहूदी स्त्रियां जा सकती थीं। स्त्रियों के आंगन के बीच इस्राएलियों का आंगन था, जिसमें केवल यहूदी पुरुष जा सकते थे। फिर मन्दिर था जिसमें केवल याजक जा सकते थे।[4] अन्यजातियों के आंगन को स्त्रियों आंगन से अलग करने वाली पत्थर की दीवार पर किसी भी विदेशी को ''मृत्यु की पीड़ा के अधीन'' मन्दिर के भीतर जाने की मनाही करता हुआ एक शिलालेख था।[5]

मन्दिर सांकेतिक रूप में अन्यजातियों को परमेश्वर की उपस्थिति से काट देता था। पौलुस को अच्छी तरह तरह से उस रुकावट का पता था, क्योंकि यरूशलेम में उसकी गिरफ्तारी इस गलत आरोप के आधार पर हुई थी कि उसने त्रुफिमुस को जो एक इफिसी अन्यजाति था, उस रुकावट के आगे मन्दिर में ले गया था (प्रेरितों 21:28, 29)।

आयत 15. परमेश्वर ने यहूदियों और अन्यजातियों के बीच इस एकता को **अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा** कर पूरा किया। आयत 13 कहती है कि मसीह के लहू में उन्हें जो दूर थे निकट लाया, और आयत 14 कहती है कि मसीह हमारा मेल है क्योंकि वह यहूदियों और अन्यजातियों को अलग करने वाली उस दीवार को जो उनके बीच में थी इकट्ठे करके एक साथ लाया। ऐसे संदर्भ में हम ''अपने शरीर में मिटा'' देने को क्रूस के साथ जोड़ते हैं। क्रूस पर मरने के समय मसीह ने व्यवस्था के द्वारा यहूदियों और अन्यजातियों के बीच बनाई गई शत्रुता को दूर करके उनके लिए मार्ग खोल दिया। यह इसलिए हुआ क्योंकि उसने उसी बात का अन्त कर दिया जिससे ये फूट पड़ी थी यानी व्यवस्था को मिटा दिया। ''मिटा'' (*katargeō*) का अर्थ ''व्यर्थ करना''[6] या ''खत्म करना'' है।[7]

यह मान लेना कि मसीह ने व्यवस्था के केवल औपचारिक भाग को खत्म किया है या व्यवस्था के कानूनी इस्तेमाल को खत्म किया है बात को न समझना है। पौलुस ने कहा कि मसीह ने ''व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं'' उसे घटाया है। ''आज्ञाएं'' (*entolē*) ''आज्ञा देने वाले के अधिकार पर ज़ोर देता है'' और यहां आज्ञा का देने वाला स्वयं परमेश्वर है। ''विधियां'' व्यवस्था में पाई जाने वाली ''शिक्षा की बातें'' (*dogma*) हैं। पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि आज्ञाओं और शिक्षा की बातों वाली पूरी व्यवस्था को क्रूस पर मसीह की मृत्यु से मिटा दिया गया था। यदि ऐसा नहीं हुआ तो यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की शत्रुता ''अर्थात वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीतियों पर थीं'' अभी जारी होनी थीं।

मसीह इन दोनों समुहों को एक-दूसरे से मिलाने और व्यवस्था की अलग करने वाली दीवार को गिराने के लिए मरा, **कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे।** उसने अपने आप में दोनों से एक नया मनुष्य ''उत्पन्न'' करने के लिए उन में सुलह करा दी। ''उत्पन्न'' शब्द *poieō* जिसका अर्थ ''बनाना'' नहीं है बल्कि *ktizō* जिसका अर्थ ''रचना'' है।[8] मसीह ने केवल यहूदियों द्वारा बेहतरीन पेशकश को अन्यजातियों की बेहतरीन पेशकश के साथ नहीं मिलाया, जिससे उनमें एकता हो। बल्कि मसीह ने यहूदियों और अन्यजातियों में से कुछ ऐसा बनाने का इरादा किया जो बिल्कुल नया हो, यानी ''एक नया मनुष्य।'' इस नये मनुष्य को ''अपने में'' बनाया गया था। 2 कुरिन्थियों 5:17 में पौलुस ने कहा, ''यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है।'' जब कोई मसीह में बपतिस्मा लेता है तो उसे मसीह की देह अर्थात कलीसिया में मिला लिया जाता है (देखें रोमियों 6:3; 1 कुरिन्थियों 12:13)। यदि कोई व्यक्ति मसीह में है तो वह एक नई सृष्टि है, तो बहुत से लोग जो मसीह में हैं वे एक नई सृष्टि हैं, अर्थात ''एक नया मनुष्य'' यानी मसीह की देह।

मसीह की देह अर्थात कलीसिया के लोग अभी भी नर और नारी हैं, धनवान और निर्धन हैं, स्वामी और सेवक हैं (6:5-9), और यहूदी और अन्यजाति हैं। परन्तु मसीह के पास आने से पहले चाहे वह जो भी हों, अब वे सब लोग मसीह में हैं, और उन सब की पहुंच परमेश्वर तक है और वे नई सृष्टि अर्थात नई मनुष्यता जो कि मसीह की देह अर्थात कलीसिया है, के महत्व का भाग हैं। हमारे बीच के अन्तरों को परमेश्वर चलाता है, परन्तु उस बड़े मुद्दे के सामने जिसके लिए हम मसीह में बने हैं ये बौने हो जाते हैं। पौलुस ने गलातियों के पास घोषणा की:

> क्योंकि तुम सब उस विश्वास करबे के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतन्त्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो (गलातियों 3:26-28)।

पौलुस कलीसिया में भूमिकाओं पर बात नहीं कर रहा था, परन्तु परमेश्वर पर बराबर की पहुंच तक बात कर रहा था। वह जीवन के पड़ावों पर ज़ोर नहीं दे रहा था बल्कि परमेश्वर के साथ सम्बन्धों पर ज़ोर दे रहा था। सवाल व्यक्तिगत पहचान का नहीं, बल्कि इस बात का है कि मसीह में नई सृष्टि का भाग कौन बनता है।

सब लोगों को एक करने में मसीह में क्रूस पर एक बड़ा लक्ष्य प्राप्त किया। परन्तु मनुष्य के साथ मनुष्य की एकता वह सबसे बड़ी बात नहीं थी जिसे मसीह ने सम्भव बनाया। हर किसी के लिए इससे भी बड़ा अवसर परमेश्वर के साथ एक होने का है। परमेश्वर ने जो ठाना था और जिसे दिखाया वही उसका अन्तिम लक्ष्य था (देखें 1:9, 10)।

एक देह में परमेश्वर के साथ मिलाए गए (2:16-22)

[16]और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए। [17]और उस ने आकर तुम्हें जो दूर थे, और उन्हें जो निकट थे, दोनों को मेल-मिलाप का सुसमाचार सुनाया। [18]क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में

पिता के पास पहुंच होती है। [19]इसलिए तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। [20]और प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नेव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो। [21]जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है।

[22]जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिए एक साथ बानाए जाते हो।

आयत 16. क्रूस के द्वारा यीशु ने परमेश्वर के साथ पापियों का मेल सम्भव बनाया। यीशु ने हमारे पाप अपने ऊपर ले लिए ताकि हम उसकी धार्मिकता को अपने ऊपर ले सकें।

परमेश्वर से मेल **एक देह** में होता है। इफिसियों में मसीह की देह कलीसिया (देखें 1:22, 23), ''नया मनुष्य'' है (देखें 2:15)। इसलिए हर व्यक्ति जिसे परमेश्वर के साथ मिलाया जाता है वह कलीसिया का एक भाग है। परमेश्वर के साथ मिलाए जाने का अर्थ कलीसिया में होना है। मसीह में बपतिस्मा लेने के समय हमें उस देह में अर्थात कलीसिया में बपतिस्मा दिया गया था (1 कुरिन्थियों 12:13)। इसका अर्थ यह हुआ कि मसीह में होने के लिए हमें कलीसिया में होना आवश्यक है। सुसमाचार की आज्ञा मानने से पहले व्यक्ति मसीह से बाहर, कलीसिया से बाहर और परमेश्वर के मेल से बाहर होता है।

यह स्थिति परमेश्वर के अनुग्रह या मसीह के क्रूस को कम नहीं करती। न ही यह कलीसिया या उद्धार में मनुष्य के योगदान पर अत्याधिक ज़ोर देती है। परमेश्वर का अनुग्रह और मसीह का क्रूस मनुष्य की स्वीकृति से ग्रहण किए जाते हैं। परमेश्वर हम पर उद्धार थोपता नहीं है। उद्धार मसीह करता है न कि कलीसिया; परन्तु कलीसिया उद्धार पाई हुई है। मनुष्य अपना उद्धार स्वयं नहीं कर सकता है, परन्तु वह उस उद्धार को जो मसीह में है स्वीकार कर सकता है। स्वीकार करते हुए वह परमेश्वर को उसे बचाने, कलीसिया में मिलाने और अपने साथ ''एक देह में'' उसे मिलाने क अनुमति दे सकता है।

क्रूस के द्वारा परमेश्वर ने **बैर को नाश** किया और परमेश्वर से मनुष्य के अलगाव के साथ साथ मनुष्य और मनुष्य के बीच की शत्रुता को समाप्त कर दिया। आयत 15 में ''बैर'' व्यवस्था को कहा गया है, जिससे यहूदी जाति और अन्य जातियों को अलग किया गया था, इस कारण कुछ टीकाकारों का सुझाव है कि आयत 16 वाला ''बैर'' विशेष रूप में मनुष्य से मनुष्य के अलग होने के लिए है। परन्तु आयतें 13 से 16 में हमें पता चलता है कि मसीह के लहू में उन्हें जो परमेश्वर से और एक दूसरे से दूर थे मिला दिया। ''बैर'' *हर* शत्रुता के सम्बन्ध में है जिसे मसीह में अपनी मृत्यु के समय नाश कर दिया।

आयत 17. शत्रुताओं को मिटाते हुए मसीह में सुलह सम्भव बना दी। न्याय (जो NASB) में यह संकेत देने के लिए कि यह पुराने नियम से ली गई बड़े अक्षरों में मिलती है। यशायाह 57:19 का मोटा सा अनुवाद है: ''जो दूर और जो निकट हैं, दोनों को पूरी शान्ति मिले।'' यशायाह की आयत के संदर्भ में हमें पता चलता है कि नबी की बात उनके लिए है **जो दूर और जो निकट** का अर्थ विदेशी धरती पर दासत्व में पड़ने वाले यहूदी और कुछ देश में रहने वाले यहूदी थे। परमेश्वर ने दोनों गुटों को **शांति** का संदेश देना था। इफिसियों में पौलुस ने यशायाह

कि बात यहूदियों और अन्यजातियों पर लागू की। क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा मसीह ने दोनों गुटों के लिए शांति की सम्भावना का प्रचार किया–एक दूसरे के साथ शांति और परमेश्वर के साथ शांति। यहां पर शांति का अर्थ मुख्यतया परमेश्वर के साथ मेल है क्योंकि दोनों गुटों को वह शांति मिली थी, जो उन्हें बताई गई थी।

उस ने आकर मेल मिलाप का सुसमाचार सुनाया यीशु के अपनी व्यक्तिगत सेवकाई के दौरान सिखाने, अपने जी उठने के बाद प्रेरितों के द्वारा यीशु के प्रचार करने, या मसीह के पूरे काम को नहीं कहा गया है। परन्तु यह मसीह की मेल कराने वाली मृत्यु पर लागू होता है जिस पर हम 2:14–18 पर विचार करते हैं।

आयत 18. इन शब्दों से वह निष्कर्ष बन जाता है जिसकी ओर प्रेरित बढ़ रहा था। मसीह के काम **के द्वारा** यहूदी और अन्यजाति दोनों की पहुंच परमेश्वर तक होती है! **पहुंच** यूनानी भाषा के शब्द *prosagōgē* का अनुवाद है जिसका अर्थ है *''लाने, हिलाने का काम''*[9] परन्तु ध्यान दिया जाना चाहिए कि क्रिया शब्द **होती है**। अकर्मक है और इसमें ''हमें लाया जाता है'' के बजाय ''हम आ सकते हैं'' का विचार पाया जाता है।[10] इफिसियों 3:12 और रोमियों 5:1, 2 पौलुस ने इसी अवधारणा को दिखाया। ''पहुंच'' का संकेत ''राजा के स्रोताओं के अधिकार'' से भी है,[11] और यहां पर राजा परमेश्वर है। केवल मसीह के द्वारा (यूहन्ना 14:6) सब लोगों की पहुंच परमेश्वर तक हो सकती है।

आयत 19. इस पत्र को प्राप्त करने वाले लोगों ने परमेश्वर तक जाने का मार्ग चुना था। इस कारण पौलुस उन्हें लिख पाया, **इसलिए तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए**। 2:19–22 में पौलुस ने 2:14–18 को संक्षिप्त किया और कुछ निष्कर्ष निकाले। अन्यजातियों को इस बात में कि वे किसी समय बिना रुतबे, बिना वाचा के, बिना अधिकार के, बिना आशा के, बिना परमेश्वर के और बिना देश के थे, **विदेशी** (देखें 2:12) और **मुसाफिर** माना जाता था। अनुवादित शब्द ''मुसाफिर'' का यूनानी संज्ञा शब्द *paroikos* मिश्रित शब्द *para* (''साथ-साथ'') और *oikeō* (''अपना घर बनाना'') से लिया गया है। इस प्रकार यह उसकी बात करता है जिसका घर किसी दूसरे घर के साथ हो। यहां इसका इस्तेमाल उसके लिए है जो किसी दूसरे देश से आता है ... परन्तु उसका दर्जा नागरिक वाला नहीं है।[12] मसीह के आने से पहले चाहे यहूदियों को विशेष आशिषें प्राप्त थीं, पर वे भी सुसमाचार में की गई प्रतिज्ञाओं से अनजान थे और परमेश्वर से अलग किए हुए थे क्योंकि वे पापी थी।

यहूदी और अन्यजाति जो मसीह में प्रवेश करते थे वे परमेश्वर के नगर के **संगी स्वदेशी** (*sumpolitēs*) थे। इफिसुस के मसीही, अन्यजाति मसीही लोगों पर विशेष ज़ोर के साथ **अब बिना घर के नहीं रहे** थे; न ही वे स्वदेश के बिना थे, क्योंकि वे परमेश्वर की प्रजा बन गए थे। कहीं और पौलुस ने इसी बात पर ज़ोर दिया है। फिलिप्पियों से उसने कहा, ''पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है'' (3:20) और कुरिन्थियों को उसने पक्का किया, ''हम मसीह के राजदूत हैं'' (2 कुरिन्थियों 5:20)। राजदूत पराए देश में रह रहा होता है जबकि उसका स्वदेश कोई और होता है। वह विदेशी धरती पर अपने देश के अधिकार के साथ प्रतिनिधित्व करता और बात करता है। मसीही लोगों के रूप में हम इस संसार में रहते हैं परन्तु हम किसी और देश के वासी

हैं; हम पृथ्वी पर रहते हुए स्वर्ग का प्रतिनिधित्व करते और उसकी बात करते हैं। सब मसीही ''संगी स्वेदशी'' हैं।

पौलुस के यह कहने का अर्थ क्या था जब उसने कहा कि इफिसुस के लोग **पवित्र लोगों के** ''संगी स्वदेशी'' थे? ''पवित्र लोगों'' (''परमेश्वर के लोग''; NIV) में कौन-कौन लोग थे? ''पवित्र लोगों'' यूनानी संज्ञा शब्द (*hagioi*) का अनुवाद है और इसका अर्थ केवल ''पवित्र जन'' (जैसे यहूदा 14 में इसका अनुवाद हुआ है) है। ये ''पवित्रों'' कौन थे?

क्या ये यहूदी मसीही थे। कुछ लोग ऐसा मानते हैं और उन जगहों का हवाला देते हैं जहां पौलुस ने यहूदी मसीही लोगों को ''पवित्र लोग'' कहा। परन्तु मसीह में इन में अन्तर किया गया है: यहूदियों और अन्यजातियों को मसीह में उन आशिषों की एक समान आवश्यकता थी जिन्हें पौलुस ने 2:13-16 में बताया है।

क्या वे स्वर्गदूत थे? अन्य इस विचार को मानते हैं और अय्यूब 15:15 और भजन संहिता 89:5 जैसे पुराने नियम के और 1 थिस्सलुनीकियों 3:13 और 2 थिस्सलुनीकियों 1:7, 10 जैसे नये नियम के हवाले देते हैं, जहां स्वर्गदूतों को ''संत'' या ''पवित्र जन'' (*hagioi*) कहा गया है। ये व्याख्याकर्त्ता यह भी अनुमान लगाते हैं कि कुलुस्सियों 1:12 जो ''पवित्र लोग'' (*hagioi*) वाला है, का अर्थ स्वर्गदूत हो सकता है। कुछ तो यह भी मान लेते हैं कि मसीही व्यक्ति का ''स्वदेश स्वर्ग पर है'' (फिलिप्पियों 3:20) वह ''ऊपर की यरूशलेम'' का है (गलातियों 4:26) और वह ''सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास'' आया है (इब्रानियों 12:22)।

परन्तु सवाल जो यहां हमें पूछना चाहिए वह यह है कि ''इफिसियों की पुस्तक में पौलुस जब *hagioi* शब्द का इस्तेमाल अन्य हवालों में किया तो वह किसकी बात कर रहा था?'' पत्र में पौलुस ने पवित्र लोगों [*hagioi*] के नाम जो इफिसुस में हैं (देखें 1:1)। इफिसुस में अन्य चौदह बार उसने इस शब्द के अलग अलग रूपकों का इस्तेमाल किया: दो बार पवित्र आत्मा के लिए (1:13; 4:30); दो बार कलीसिया के लिए (2:21; 5:27); दो बार प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के लिए (3:5); एक बार इसमें यह वर्णन है कि मसीही लोगों का जीवन कैसा होना चाहिए (1:4); और आठ बार 2:19 को मिलाकर इसका अनुवाद ''पवित्र लोग'' हुआ है (1:15, 18; 3:8, 18; 4:12; 5:3; 6:18)। ''पवित्र लोगों'' के सम्बन्ध में इफिसुस की पुस्तक में *hagios* और *hagioi* के इस्तेमाल यहूदी मसीही लोगों या स्वर्गदूतों के लिए नहीं बल्कि सब मसीही लोगों के लिए लगते हैं, चाहे वे यहूदी हो या अन्यजाति।

परमेश्वर के घराने वाक्यांश मसीही व्यक्ति के मसीह की देह के होने के बोध पर और ज़ोर देता है। यूनानी संज्ञा शब्द *oikeios* का इस्तेमाल पौलुस द्वारा और कहीं इस्तेमाल किया गया है (गलातियों 6:10; 1 तीमुथियुस 5:8) और इसका अर्थ है *''किसी घराने या परिवार के होना ... निकट सम्बन्ध ... रिश्तेदार।''*[13] यह ''संगी स्वदेशी'' से अधिक निकट शब्द हैं और इसका अर्थ यह तथ्य है कि मसीही लोग परमेश्वर के परिवार का भाग हैं, परमेश्वर के साथ उनका सम्बन्ध है और परमेश्वर के साथ पिता/बालक का सम्बन्ध है।

आयत 20. प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नेव पर बनाए गए वाक्यांश आत्मिक भवन के रूप में कलीसिया की बात करता है, जिसकी नींव प्रेरित और भविष्यवक्ता हैं। यह रूपक

थोड़ा अजीब लग सकता है क्योंकि हम जानते हैं कि कलीसिया पतरस द्वारा अंगीकार की गई इस सच्चाई पर ''बनी'' है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है (देखें मत्ती 16:16-18)। कहीं और पौलुस ने कहा है, ''क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है: कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता'' (1 कुरिन्थियों 3:11)। तो फिर वह यह दावा कैसे कर पाया कि कलीसिया ''प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नींव पर'' बनी है?

पहले तो ''प्रेरित और भविष्यवक्ता'' किन्हें कहा गया है? बारह ''प्रेरितों'' (*apostoloi*) को अपने चेलों में से मसीह द्वारा चुना गया था। बाद में यहूदा का स्थान लेने के लिए जो ''सिर के बल गिरा अपने स्थान पर जाने के लिए छोड़ गया'' (प्रेरितों 1:15-26) की जगह लेने के लिए मत्तियाह को चुना गया। अन्त में पौलुस को ''परमेश्वर की इच्छा से'' (इफिसियों 1:1) और प्रेरितों में से अन्तिम होने के लिए ''मानो अधूरे दिनों का जन्मा'' (1 कुरिन्थियों 15:8) चुना गया था। पौलुस ने दावा किया कि एक ओर तो वह ''प्रेरितों में सबसे छोटा'' था क्योंकि उसने कलीसिया को सताया था (1 कुरिन्थियों 15:9) परन्तु दूसरी ओर वह किसी भी प्रेरित से किसी भी प्रकार ''कम'' नहीं था (2 कुरिन्थियों 11:5; देखें 12:11)। अन्य प्रेरितों की तरह वह जी उठे मसीह का चश्मदीद गवाह था (देखें प्रेरितों 1:22) और उसने प्रेरिताई के ''चिह्नों'' के रूप में आश्चर्यकर्म किए थे (2 कुरिन्थियों 12:12)।

''प्रेरितों'' का अर्थ वास्तव में वे लोग हैं जिन्हें ''भेजा गया'' था।[14] नये नियम में इसका इस्तेमाल बारहों के अलावा मत्तियाह और पौलुस के लिए किया गया है। प्रभु के भाई याकूब को प्रेरित कहा जाता है; बरनबास को प्रेरित कहा जाता है; झूठी शिक्षा देने वालों को प्रेरित कहा जाता था; कुछ लोग प्रेरित होने का दावा करते थे, जबकि वे थे नहीं; और मसीह को प्रेरित कहा जाता था।[15] ये सभी प्रेरित थे, पर उस अर्थ में नहीं जिसमें वे बारह मत्तियाह और पौलुस थे बल्कि इस अर्थ में कि वे उन सभी को किसी के द्वारा किसी विशेष काम के लिए ''भेजा गया'' था।

''भविष्यवक्ताओं'' किसे कहा गया है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हमें यह विचार करना आवश्यक है कि भविष्यवक्ताओं का उल्लेख प्रेरितों के बाद आता है, 3:5 में पौलुस ने भविष्यवक्ताओं के उन पर सुसमाचार प्रकट किए जाने की बात की, और कलीसिया को मसीह के कामों में भविष्यवाणी का उल्लेख है (4:11)। इसलिए ये मसीही युग के भविष्यवक्ता होंगे न कि पुराने नियम के भविष्यवक्ता, जो सुसमाचार को केवल भविष्य में देखते थे। नये नियम में भविष्यवक्ता और भविष्यवाणी का दान कलीसिया के जीवन का भाग थे (देखें प्रेरितों 11:27; 13:1; रोमियों 12:6; 1 कुरिन्थियों 12—14; 1 थिस्सलुनीकियों 5:20)।

प्रेरित और भविष्यवक्ता किस अर्थ में ''कलीसिया की नींव'' थे। 1 कुरिन्थियों 3:9-15 में पौलुस ने परमेश्वर की इमारत की नींव के रूप में मसीह को और अपने आप तथा दूसरों को उन समझदार मिस्त्रियों के रूप में दिखाया, जिन्होंने मसीह के प्रचार के द्वारा नींव रखी थी। इमारत उस नींव पर बनाने की प्रक्रिया लोगों के मसीह में परिवर्तित होने को कहा गया। परन्तु इफिसियों 2 में पौलुस ने प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं को नींव डालने वालों और नींव के आधार के रूप में नहीं बल्कि अलग ढंग से अर्थात स्वयं नींव के रूप में दिखाया। ''कि नेव'' का अर्थ वह आधार हो सकता है जो प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं ने बनाया। यह प्रेरितों को कलीसिया की नींव डालने वालों के रूप में दिखाता है जिस में उन्होंने प्रचार किया, यानी मसीह का। यह विचार मत्ती

16:16-18 और 1 कुरिन्थियों 3:11 के साथ बहुत मेल खाता है और प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं को नींव के साथ केवल इस अर्थ में मिलाता है कि उन्होंने क्रूस पर चढ़ाए गए, जी उठे परमेश्वर के पुत्र, उस चट्टान के रूप में मसीह का प्रचार किया जिस पर कलीसिया बनी है।

आयत 20. व्याख्याकार इस पर सहमत नहीं हैं कि **कोने का पत्थर** वाक्यांश का क्या अर्थ है। यह *akrogōniaios* का अनुवाद है और आम तौर पर इसकी परिभाषा ''अन्तिम छोर पर; नींव के पत्थर के कोने (दिए जाने वाले सहारे के कारण महत्वपूर्ण, और सम्माननीय स्थान)'' होने के रूप में ढांचे के सम्बन्ध में की जाती है।[16] कुछ लोग यह स्थिति लेकर कि इस शब्द का अर्थ कि ''कैपस्टोन'' अर्थात ''इमारत की चोटी के पत्थर का सिरा'' है।[17] पवित्र शास्त्र में ''कोने का पत्थर'' के हवालों और अलग-अलग उपयोगों की प्रासंगिकता की समीक्षा से यह तय करने में सहायता मिलेगी कि कौन सी स्थिति बेहतर हो सकती है।

भजन लिखने वाले ने कहा है, ''राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था वही कोने का सिरा हो गया है'' (भजन संहिता 118:22)। यशायाह 28:16 में परमेश्वर ने कहा, ''देखो, मैं ने सिय्योन में नेव का पत्थर रखा है, एक *परखा हुआ* पत्थर, कोने का अनमोल और *अति दृढ़ नेव* के योग्य।'' दोनों आयतें मसीहा से जुड़ी हैं और नये नियम में इन्हें दोहराया गया है। यीशु ने भजन की भाषा का इस्तेमाल उसके अपने लोगों द्वारा उसके ठुकराए जाने की बात के लिए किया, परन्तु ''कोने का पत्थर'' की बात नहीं की (देखें मत्ती 21:42; मरकुस 12:10, 11; लूका 20:17)। प्रेरितों 4:11 में पतरस ने भजन संहिता में से दोहराते हुए इसे मसीह के ठुकराए जाने पर लागू किया। रोमियों 9:33 और 10:11 में पौलुस ने पुराने नियम के इन दोनों हवालों को दोहराया और इन्हें मसीह को ग्रहण किए जाने और ठुकराए जाने के लिए लागू किया। परन्तु उसने भी ''कोने के पत्थर'' की व्याख्या नहीं बताई।

''कोने का पत्थर'' की पहचान कराते हुए सबसे सहायक आयत यशायाह 28:16 हो सकती है जोकि कहती है कि यह ''यह अति दृढ़ नेव के योग्य'' है। NASB के कुछ मुद्रणों के मार्जन नोट में कहा गया है कि ऐसा पत्थर ''अच्छी तरह लगा'' है। यशायाह की आयत के अनुसार और पहले दी गई परिभाषा के अनुसार ''कोने का पत्थर'' दीवार के कोने में लगे ''तिकोणे पत्थर'' में कहना बेहतर लगता है ताकि ''कोने के पत्थर का कोना सभी पंक्तियों को और इमारत के अन्य सभी कोने को सम्भालता है।''[18] यह बात **मसीह** को परमेश्वर की इमारत की नींव बना देगी। प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के द्वारा इसका प्रचार किया गया था और वह कोने का पत्थर है जो पूरी इमारत की हर पंक्ति और कोने को तय करता है। मसीह वह नींव है जिसके ऊपर कलीसिया बनी है आओ वह सारा नियम जिस पर कलीसिया को विश्वास करना, सिखाना और काम करना है। मसीह (नींव) और उसके वचन (अधिकार) के बिना कलीसिया का अस्तित्व या कार्य नहीं हो सकता था।

आयतें 21, 22. इमारत के पौलुस के रूपक की समीक्षा दी गई है। **जिस में** यहां पर ''मसीह यीशु'' के लिए है और **सारी रचना** ''परमेश्वर के घराने'' को कहा गया है जिसमें ''नींव'' और ''कोने का पत्थर'' भी हैं। ''जिस में'' का इस्तेमाल फिर से करके पौलुस दिखा रहा था कि कलीसिया का काम, कलीसिया की उन्नति और कलीसिया का सुझाव और कलीसिया का अस्तित्व मसीह के साथ सम्बन्ध पर निर्भर है। पौलुस ने अपनी बात के आरम्भ में इस तथ्य

पर ज़ोर दिया और फिर से अपनी बात के अन्त में ''प्रभु में'' कहते हुए इस पर ज़ोर दिया।

एक साथ मिलकर का अनुवाद कृदंत *sunarmologeō* से किया गया है जो नये नियम में केवल यहां और 4:16 में मिलता है। दोनों वचनों में दिया गया रूपक इस बात पर ज़ोर देता है कि कलीसिया के सदस्य मसीह के पूर्ण बनाने के भाग हैं, जिसे इमारत और देह के रूप में दिखाया गया है। 4:16 में पौलुस का मिशन देह के रूप में कलीसिया है, जिसका हर अंग मसीह के लिए अपनी सेवा में एक-दूसरे पर निर्भर है। देह की उन्नति और बनना तभी सम्भव है जब हर अंग सही ढंग से काम करे। वर्तमान कृदंत संकेत देता है कि यह एक साथ मिलना निरन्तर वर्तमान क्रिया है।[19] पूर्वसर्ग *sun* आत्मिक एकता को दर्शाता है।[20] अर्थ यह है कि परमेश्वर की इमारत के रूप में कलीसिया एक वर्तमान वास्तविकता है, परन्तु यहूदियों और अन्यजातियों का एक और समान रूप में एक होकर मिलना चलती रहने वाली प्रक्रिया है। ''बनती जाती है'' संकेत देता है कि इफिसुस के लोगों को सुसमाचार की आज्ञा मानने और कलीसिया में मिलाए जाने के समय पहले ही नींव पर रखा जा चुका था (देखें प्रेरितों 2:38-47)।[21]

कलीसिया अब है और आत्मिक घराने में इसे ''जीवते पत्थरों के रूप में'' इस में लोगों को गिराते रहना है (देखें 1 पतरस 2:5)। इस प्रकार से यह मसीह में **पवित्र मन्दिर बनती जाती है**। कलीसिया न केवल ''जीवते पत्थरों'' के लगाए जाने से बढ़ती है बल्कि अपने सदस्यों के आत्मिक विकास जो ''जीवते पत्थर'' है से यह आत्मिक रूप में बढ़ती है जिसमें उन्हें जीवन की पवित्रता मिलती है। इस दोहरे विकास में कलीसिया ''पवित्र मन्दिर'' बनती जाती है।

यह बढ़ता हुआ मन्दिर वहां पर है, जहां **आत्मा के द्वारा** परमेश्वर रहता है। पौलुस ने आयत 22 पर 1 कुरिन्थियों 3:16 में यह पूछते हुए कि, ''क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है'' परमेश्वर की प्रेरणा से टिप्पणी की। उसने आगे कहा, ''परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो'' (1 कुरिन्थियों 3:17)। कलीसिया परमेश्वर का भवन, परमेश्वर का मन्दिर और परमेश्वर का वास स्थान है। पवित्र जीवन के लिए कितना बढ़िया प्रोत्साहन है!

इफिसियों के इस भाग में पौलुस ने दिखाया कि यहूदियों और अन्यजातियों को मसीह में एक किया गया था। उन्हें एक दूसरे के और परमेश्वर के साथ मिलाया गया था। वे परमेश्वर के राज्य के लोग, परमेश्वर के पवित्र जन, परमेश्वर के परिवार के लोग और परमेश्वर के बढ़ते रहने वाले मन्दिर के जीवित पत्थर, अर्थात वह स्थान थे जहां वह वास करता है।

प्रासंगिकता

एक और एक ... एक होता है! (2:11-22)

मेल की एकमात्र अनन्त वाचा जो इस संसार में रही है और अन्त तक रहेगी, परमेश्वर द्वारा बांधी गई और उसके पुत्र यीशु के लहू के द्वारा मोहर बंद की गई वाचा है। उस मेल की महानता को जिसे यीशु लेकर आया समझने के लिए हमें उस फूट को याद करना होगा जो मसीह के समय में और कलीसिया के आरम्भ के समय लोगों के बीच पाई जाती थी। इफिसियों 2 की अन्तिम आयतों में पौलुस ने हमें मनुष्य और मनुष्य के बीच की दूरी को दिखाया जिसे परमेश्वर

ने हमारे लिए दूर किया ताकि उसकी देह अर्थात कलीसिया विश्वासियों की एक बड़ी, एकीकृत देह बन जाए।

अलग किया जाना (2:11, 12)। हर समाज में कुछ निशानदेही होती है जिससे समाज के अलग-अलग लोगों के बीच रुकावटें खड़ी होती हैं। पौलुस के समय में संसार यहूदियों और अन्यजातियों के दो वर्गों में बंटा हुआ था। इन दोनों समाजों के बीच की शत्रुता को और अधिक नहीं बताया जा सकता।

यहूदी और अन्यजातियों में क्या अन्तर है ? यहूदी अपनी वंशावली अब्राहम, इसहाक और याकूब तक ले जा सकता था। जिसकी वंशावली अब्राहम से नहीं मिलती थी वह अन्यजाति होता था। पौलुस ने वे छह अन्तर बताए, जिनके कारण उसके समय के यहूदी लोग अन्यजातियों से अलग थे। अन्यजातियों का ...

(1) खतना नहीं होता था (2:11)। अन्यजातियों में खतने का संस्कार नहीं था। परमेश्वर ने यह याद रखने के लिए कि उसने यहूदी लोगों के द्वारा संसार को आशीष देने की प्रतिज्ञा की है। पहचान के लिए उन्हें एक विशेष चिह्न दिया था। परन्तु यहूदियों ने इसे शरीर पर घमण्ड करने की बात बना लिया। पहली सदी तक यह अवहेलना अपने शिखर तक पहुंच चुकी थी।

(2) मसीह नहीं था (2:12)। यहूदियों के लिए इतिहास एक उद्देश्य के साथ आगे बढ़ रहा था। परमेश्वर इस्राएल जाति के द्वारा अपनी इच्छा को अमल में ला रहा था। एक दिन परमेश्वर ने अन्यजातियों के श्रापित दमन से हमेशा के लिए यहूदियों को छुड़ाने के लिए अपने ख्रिस्तुस अर्थात अपने मसीहा को भेजना था। मसीह के आने में उनकी आशा ने ही उन्हें लगातार ठुकराए जाने और सताए जाने के बीच यहूदियों को तसल्ली और प्रेरणा दी।

परन्तु अन्यजातियों का ऐसा कोई सपना नहीं था। उनके लिए तो इतिहास किसी दिशा की ओर नहीं जा रहा था। यूनानी दार्शनिक इतिहास को चक्रों में भागते हुए दिखाते थे। तीन हज़ार साल तक इतिहास अपनी चाल चलता रहा; फिर एक बड़ा अग्निकांड हुआ, जिसकी लपटों में रोमी संसार चल दिया।[22] किसी ने कहा कि इतिहास पूरी प्रक्रिया को दोहराने के लिए खत्म हो गया, यानी वैसे ही लोग और घटनाएं बार-बार देखी जाएंगी। परिणाम यह हुआ कि उन्होंने जीवन को व्यर्थ और अर्थहीन माना। अन्यजातियों का संसार के उनके विचार की व्यर्थता से उन्हें बचाने के लिए कोई छुड़ाने वाला नहीं आने वाला था।

(3) कोई स्वदेश नहीं (2:12)। परमेश्वर ने इस्राएल जाति को अपने लोग होने के लिए बुलाया था। उसकी बुलाहट के कारण परमेश्वर के राज्य में उन्हें एक ईश्वरीय संदेश मिला था। अन्यजातियों को ऐसी कोई बुलाहट नहीं हुई थी। परमेश्वर के राज्य के लोग होने की उनकी कोई अवधारणा नहीं थी, न कि उनके राज्य के लोग होने का अवसर देने की पेशकश दी गई थी।

पहली सदी तक यहूदी लोग अन्यजातियों से परिवर्तित होने वाले कुछ लोगों को स्वीकार कर रहे थे; परन्तु सब कुछ कर लेने के बावजूद ये यहूदी बनने वाले लोग दूसरे दर्जे के लोग ही माने जाते थे। उन्हें यही कहना पड़ता था, ''तुम्हारा पिता अब्राहम।'' उन्हें बार-बार याद दिलाया जाता था कि परमेश्वर के राज्य में नागरिकता में उनके पास कोई स्वाभाविक अधिकार नहीं है।

(4) कोई वाचा नहीं (2:12)। अब्राहम, इसहाक और याकूब तथा बाद में परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ सम्बन्धों की वाचा बांधी। अन्यजातियों के साथ उसने कभी ऐसी वाचा नहीं

बांधी। उन्हें ऐसी कोई ईश्वरीय प्रतिज्ञा नहीं दी गई थी, जिसके पूरा होने की वे उम्मीद कर सकते। पुराने नियम की सभी वाचाएं और प्रतिज्ञाएं परमेश्वर द्वारा अपनी चुनी हुई इस्राएली जाति के साथ थी। अन्यजातियों में ऐसा कुछ नहीं था, जिसका वे दावा कर सकते थे।

(5) कोई भरोसा नहीं था (2:12)। प्राचीन जगत में आशाहीनता का एक बड़ा बादल छाया हुआ था। तर्कविद्या किसी काम की नहीं थी; परम्पराएं खोखली थीं; धर्म अपने आराधकों के जीवन या मृत्यु का सामना होने पर सहायता करने में शक्तिहीन थे। अन्यजातियों को परमेश्वर की ओर से कोई संदेश नहीं मिलता था, न ही कोई मसीह था जो उन्हें उनकी निराशा से निकालता, न उद्धार की कोई आशा थी। क्या इसमें कोई आश्चर्य की बात है कि उन्हें भविष्य का सामना करने का कोई भरोसा नहीं था, बहुतायत से जीवन जीने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने वाली कोई आशा नहीं थी?

(6) कोई सृष्टिकर्त्ता नहीं (2:12)। उनके पास मूर्तियों की बहुतायत थी पर परमेश्वर नहीं था। अन्यजातियों का सृष्टिकर्त्ता उन्हें मालूम ही नहीं था कि कौन है। उन्हें ध्यान हीं नहीं था कि वह कौन है या वह उन से क्या चाहता है। वे केवल इतना कर सकते थे कि ''अनजाने परमेश्वर'' की मूर्ति बनाकर उम्मीद रखें कि उन्होंने किसी देवी या देवता को नाराज नहीं किया।

अन्यजातियों के इन बड़े अन्तरों ने दूरी और बढ़ा दी। इन छह बड़े हफ्तों के यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की दूरी बढ़ गई। न खत्म होने वाले अन्तरों से दोनों समाज बंट गए।

बंट जाने अर्थात अपने आस पास के लोगों से सोच में अलग होना आज के संसार में आम बात है। इसमें लोगों के मनों में पाप के काम करने के फल का राज है।

प्रायश्चित (2:13-17)। जहां मनुष्य नाकाम हुआ है, वहां परमेश्वर सफल हो गया है। उसके पास मनुष्य जाति के एक-दूसरे से अलग होने के हर रूप का इलाज है: ''पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो'' (2:13)। मसीह मनुष्य के न केवल परमेश्वर से अलग होने, बल्कि दूसरे लोगों से अलग होने का भी समाधान है। वह उन्हें जिन में हिंसक अन्तर होते हैं लेकर फिर से उनके सम्बन्ध में ''एक'' बना देता है।

यीशु हमारा मेल है (2:14)। पौलुस ने यह नहीं कहा कि यीशु सुलह को *लाया* बल्कि उसने कहा कि यीशु हमारा मेल *है*। इसका क्या अर्थ है?

मान लीजिए कि लड़ाई-झगड़े करते हुए कई साल इकट्ठा रहने के बाद एक पति और पत्नी तलाक के लिए अदालत में चले जाते हैं। एक वकील एक कागज तैयार करता है जिसमें लिखा है कि पति इस सम्पत्ति को रख लेगा जबकि पत्नी उस सम्पत्ति को, और पति को यह छूट देनी होगी और पत्नी को यह छूट। कागज सरकारी समझौता है, पर पुरुष और स्त्री हो सकता है कि कागज पर लिखी बात से कभी वास्तव में सहमत न हों।

इसके उलट मान लें कि उनका दस साल का बेटा, जिससे वे दोनों बहुत प्रेम करते हैं, आकर दोनों के हाथ पकड़कर उन्हें मिला देता है। फिर चिल्लाते हुए वह कहता है, ''प्लीज़ तलाक मत लो। इकट्ठे रहो। मुझे आपकी आवश्यकता है। मैं चाहता हूं कि आप फिर से एक-दूसरे से प्रेम करो। *मुझ से* जो भी बन पड़े मैं करने को तैयार हूं।'' अपने पिता और माता के बीच समझौता करवाने के लिए बेटा उस कागज से कहीं बढ़कर काम कर सकता है। कानून लोगों के दिलों को नहीं बदल सकता है।

पौलुस ने कहा कि मनुष्य की दुविधा का उत्तर यीशु स्वयं है। जब हमारे मन में यीशु के लिए साझा प्रेम हो और वह हमारे अन्दर रखा हो, तो हमारे लिए स्वाभाविक प्रतिक्रिया एक-दूसरे से प्रेम करना है। वह हम में एक-दूसरे के साथ मिलाने वाला बन जाता है।

यीशु मेल कराता है (2:15)। यीशु मनुष्य जाति के लड़ रहे गुटों में शांति कैसे करवाता है? ऐसा वह एक नई मनुष्यता को बनाकर करता है। वह उसके अन्दर एक नया मनुष्य रच देता है। ''यहूदी मसीही'' और ''अन्यजाति मसीही'' नये नियम से पूरी तरह से बाहर हैं। मसीह में व्यक्ति केवल एक ही प्रकार का होता है, वह मसीही होता है!

इफिसियों की पुस्तक में पहले ही कम से कम दस बार पौलुस ने ''मसीह में'' (या ''उस में'') हमारी स्थिति का संकेत दिया था। यदि किसी यहूदी का उद्धार हुआ है, तो वह मसीह में है। यदि किसी अन्यजाति का उद्धार हुआ है, तो वह मसीह में है। मसीह की केवल और केवल एक देह है। देह का यही रहस्य है। कई जातियों, कई समाजों और कई राष्ट्रीयताओं में से केवल एक देह यानी यीशु मसीह की देह बनती है।

यीशु से हमारा मेल होता है जब वह हमारे अन्दर रहता है। यीशु से हमारा मेल होता है जब हम यह मान लेते हैं कि हम सब उस में एक हैं।

यीशु शांति का प्रचार करता है (2:17)। यीशु मनुष्य के पापों के लिए न्याय का प्रचार करने के लिए इस पृथ्वी पर आ सकता था, पर वह नहीं आया। वह शांति के राजकुमार के रूप में, शांति का संदेश लेकर आया। यदि मसीह आपके मन में है, और आप मसीह में हैं, तो आप को अपने पति या पत्नी के साथ घर में और अपने बच्चों के साथ, अपने सहकर्मियों के साथ काम पर, अपने पड़ोसी के साथ गली में, अपने रिश्तेदारों के साथ देहात में मेल कराने वाला दूत होने के लिए बुलाया गया है।

हमें शत्रुता की रुकावटों को तोड़ना होगा। हम शांति के राजकुमार में हैं, इस कारण दूसरों के साथ शांति कराने और सब में शांति की सम्भावना का प्रचार करने का हमारा साझा मिशन है।

समझौता (2:18-22)। लोगों में अलगाव पाप के कारण है। यीशु उन्हें अपनी देह में मिलाते हुए लोगों के बीच प्रायश्चित करता है। अन्तिम सच्चाई जिसका ध्यान पौलुस ने खींचा वह बात शांति थी, जो लोगों को मसीह में मिली है।

''बैर की अलग करने वाली दीवार'' (2:14; NIV) की बात करते हुए पौलुस के मन में सम्भवतया यरूशलेम के मन्दिर की अलग करने वाली दीवार होगी। पौलुस ने मन्दिर के आंगन में से जाति की अन्यजातियों के आंगन को उस भीतरी आंगन से, जिसमें केवल यहूदियों को जाने की अनुमति थी अलग करती थी पांच फुट के करीब ऊंची दीवार का ध्यान दिलाया। 1871 में पुरातत्व शास्त्रियों को इस अलग करने वाली दीवार के साथ एक शिलालेख मिला जिस पर लिखा था, ''मन्दिर के आस पास के अहाते में कोई अन्यजाति प्रवेश न करे। जो भी पकड़ा जाए वह बाद में होने वाली अपनी मृत्यु का ज़िम्मेदार होगा।''

जातियों के बीच की पुरानी शत्रुता का प्रतीक यह दीवार थी। आत्मिक रूप में कहें तो मरने के समय यीशु ने उस दीवार को गिरा दिया था। अब सब लोगों की संसार के परमेश्वर तक एक जैसी पहुंच है: ''क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुंच होती है'' (2:18)।

पौलुस ने अपनी बात को तीन रूपकों के साथ और समझाया। केवल एक ही देश है (2:19), पवित्र देश, और हर सदस्य का अपना संदेश स्वर्ग में है। एक ही परिवार है (2:19); हम परमेश्वर के घराने में भाई और बहनें हैं, हम में चाहे जो भी अन्तर है। मन्दिर केवल एक है (2:21); यह हाथ का बनाया हुआ नहीं बल्कि हर पृष्ठभूमि से आने वाले पुरुषों और स्त्रियों का है जो इस आत्मिक मन्दिर में जीवते पत्थरों के रूप में सेवा करते थे।

परमेश्वर ने अपने पुत्र के द्वारा सब लोगों को शांति दी है। हमें एक-दूसरे के साथ आत्मा की एकता के लिए कहा जाता है। यीशु हमारा मेल है और वह हमारे द्वारा पृथ्वी पर लोगों के बीच में शांति लाता है। ऐसे किसी भी व्यक्ति पर जो प्रभु की कलीसिया में वैध की बांटने वाली दीवार बनाता है, हाय! परमेश्वर मनुष्यों के बीच की रुकावटों को दूर करने के काम में लगा हुआ है। जिस भी किसी व्यक्ति के शब्दों या कामों से कलीसिया में शांति भंग होती है वह परमेश्वर के विरुद्ध लड़ रहा है!

सारांश। शांति के दूत होने के कारण हमें शांति के राजकुमार से मिल जाना आवश्यक है। हम दूसरों पर आत्मिक स्थिति, जाति या व्यक्तित्व के पार पहुंचकर संसार को दिखा सकते हैं कि कलीसिया में एक नया व्यक्ति होने का वास्तव में अर्थ क्या है।

क्रिस बुलर्ड

क्रूस के ऊपर-मसीह में मेल (2:13-22)।

आयत 13 में ''पर अब'' आयत 4 के ''परन्तु परमेश्वर'' के साथ मेल खाता है। क्रूस के लहू ने मसीह को ''हमारा मेल'' बना दिया। उसकी बलिदानपूर्वक मृत्यु ने *मनुष्य और मनुष्य के बीच मेल* सम्भव करा दिया, जिससे वे लोग जो एक-दूसरे से अलग थे ''एक नया मनुष्य,'' अर्थात कलीसिया में मिल गए। मसीह ने ''एक देह में'' परमेश्वर के लिए मसीही लोगों को मिलाकर भी *मनुष्य और परमेश्वर के बीच मेल* करा दिया। परमेश्वर और मनुष्यजाति के बीच मेल से उन लोगों को जो आज सुसमाचार को मानते हैं परमेश्वर के राज्य, ''परमेश्वर के घराने'' के लोग और एक ''पवित्र मन्दिर'' जिसमें परमेश्वर वास करता है, ''संगी स्वदेशी'' बनने के लिए योग्य बनाया।

जे लॉकहर्ट

टिप्पणियां

[1]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कन्कोर्डेंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामैंट* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 358. [2]*द एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामैंट,* संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:294 में एस. डी. एफ. सैलमण्ड, ''द एपिस्टल टू द इफिसियंस।'' [3]केन्नथ एस. वुएस्ट, *वुएस्ट'स वर्ड स्टडीज़ फ्रॉम द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर: इफिसियंस एंड कोलोसियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 75. [4]एल्फ्रेड एडरशेम, *द लाइफ एंड टाइम्स ऑफ़ जीज़स द मसायाह,* न्यू अपडेटड एडिशन (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1993), 169-70. [5]जोसेफ़स *एंटिक्विटीस* 15.11.5. [6]बुलिंगर, 19. [7]एल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामैंट:*

इफिसियंस, फिलिपियंस एंड कोलोसियंस, संपा. रॉबर्ट फ्रयू (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1965), 47. [8]वुएस्ट, 76. [9]सी. जी. विलके एंड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट,* अनु. व संपा. जोसेफ हेनरी थेयर (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 544; वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकॉगो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 876 भी देखें। [10]आर. सी. एच. लेंसकी, *द इंटरप्रिटेशन ऑफ़ सेंट पॉल'स एपिस्टल टू द गलेशियंस, टू द इफिसियंस एंड टू द फिलिप्पियंस* (कोलम्बस, ओहायो: वाटबर्ग प्रैस, 1946; रिप्रिंट: मिनियापुलिस: आग्सबर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1961), 447.

[11]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 149. [12]वुएस्ट, 79. [13]थेयर, 439. [14]बुलिंगर, 58. [15]गलातियों 1:19; प्रेरितों 14:14; 2 कुरिन्थियों 11:13; प्रकाशितवाक्य 2:2; इब्रानियों 3:1. [16]बुलिंगर, 188. [17]लिंकोन, 155. [18]लेंसकी, 454. [19]लिंकोन, 157. [20]लेंसकी, 459.

[21]लिंकोन, 152. [22]जुलाई 19, ईस्वी 64 को रोम का बड़ा अग्निकांड आरम्भ हुआ और कई दिनों तक बेकाबू रहा। आग से अन्त में रोम के चौदह जिलों में से तीन नष्ट हो गए, सात और जिलों को अत्यधिक हानि हुई जिससे केवल चार जिले बिना हानि के रह गए। इसमें प्राइवेट महल, मकान, मन्दिर, वेदियां, तीर्थ स्थान और रोमी विजयों के द्वारा जीती गई बेशुमार दौलत नष्ट हो गई। (टेसिटुस *ऐनल्ज़* 15.40-41.)